SHODH CHETNA – YEAR-7, VOL. 3 (JULY TO SEP., 2021) ISSN : 2350-0441
A Peer-Reviewed
International Referred &
Multifocal Research Journal
IMPACT FACTOR 5.299
Paper Recieved : 18th Aug 21
Paper Accepted : 3rd Sep 21

काव्यों में प्रकृति वर्णन का महत्त्व

□ डॉ. आनन्दराम पैकरा*

शोध सारांश

संस्कृत के कवि सौन्दर्य तथा माधुर्य के उपासक होते हैं। उनका हृदय सौम्य भाव में विशेष रमता है। माधुर्य के उत्पादक दृश्यों के ऊपर दृष्टि विशेष रीझती है। वे मानव-हृदय के भावों के समझने तथा विश्लेषण में जितने कृतकार्य हैं उतने ही वे बाह्य प्रकृति के भी रहस्यों के परखने तथा उद्घाटन में समर्थ हैं। बाह्य प्रकृति का सूक्ष्म निरीक्षण संस्कृत काव्यों में, विशेषतः प्राचीन काव्यों में, प्राप्त होता है। प्रकृति के दृश्यों को कवियों ने अपने तीव्र अवलोकन का विषय बनाया है तथा यथार्थता से मण्डित वर्णनों का चमत्कार सरसहृदयों के हृदय को बलात् अपनी ओर खींचता है। प्रकृति संस्कृत काव्यों में उभयरूपेण चित्रित की गई है—आलम्बन रूप से तथा उद्दीपन रूप से। आलम्बन रूप वाले वर्णनों में प्रकृति ही स्वयं वर्ण्य रहती है तथा उद्दीपन रूप में उसका मानव-प्रकृति के ऊपर उत्पन्न प्रभाव ही वर्णन का विषय रहता है।

कालिदास और भवभूति ने वर्षा के आगमन का वर्णन किस सीधी-सादी यथार्थता से नीचे लिखी पंक्तियों में रख दिया है--

आषाढस्य प्रथमदिवसे मेघमाश्लिष्टसानुम्।[1]
श्रयति शिखरमद्रेर्नूतनस्तोयवाहः॥[2]

भवभूति की पंक्ति कालिदास की पंक्ति की स्मृति से उत्पन्न हुई है, किन्तु इस पंक्ति के अनुकरण में कितनी नूतनता है यह 'तोयवाह' (जल से भरा हुआ मेघ)[3] और उसमें जुड़े हुए 'नूतन' विशेषण से द्योतित होती है। ऊपर से दृष्टान्त में चित्र की रेखा बादलों के अनुरूप सरल और स्वच्छ है, किन्तु चित्रण की यथार्थता से सुचारु और अधिक गहरी रेखा से सुसज्जित चित्र यदि देखना हो और उसे भी एक पंक्ति में, तो कालिदास की इस पंक्ति को याद कीजिये—

'प्रायो तालीवनश्याममुपकण्ठं महोदधेः'।[4]

और यदि इससे अधिक सविस्तर चित्र चाहिए तो रघुवंश के इस पम्पा सरोवर के चित्र को देखो[5]--

उपान्तवानीरवनोपगूढान्यालक्ष्य पारिप्लवसारसानि।
दूरावतीर्णा पिबतीव खेदादमूनि पम्पासलिलानि दृष्टिः॥

देखो तो पम्पा सरोवर के तट पर नरकुल का कितना घना वन है। उसने मानो पम्पासर के प्रभूत जल को आलिङ्गित सा कर लिया है। उसके भीतर लता के झुण्ड में बैठे हुए चंचल सारस पक्षी इस पूर्व चित्र में कितना वैचित्र्य उत्पन्न कर रहे हैं। अपने नेत्रपुटों से आप

* सहायक प्राध्यापक, शास.आर.बी.आर.एन.एफ.एस. पी.जी. कालेज, जसपुर नगर (छत्तीसगढ़)

Scanned with CamScanner

भी इस चित्रगत सरोवर का जल अच्छी तरह से पीजिये। किन्तु यदि इन पूर्वोक्त सारसों को आकाश में उड़ते देखना हो तो इस चित्र को देखें—

अमूर्विमानान्तरलम्बिनीनां श्रुत्वा स्वनं
काञ्चनकिङ्किणीनाम्।
प्रत्युद्व्रजन्तीव खमुत्पतन्त्यो
गोदावरीसारसपङ्क्तयस्त्वाम्॥[6]

दूर आकाश में एक विमान की कल्पना करो और उसमें सुवर्ण के घुंघुरू लगाओ, किन्तु यह बतलाओ कि उस चित्र में घुंघुरुओं का शब्द आप कैसे सुन सकते हैं? यह तो काव्य की ही विशेषता है कि इसमें चित्र और सङ्गीत दोनों का ही संमिश्रण हो सकता है। पास बहनेवाली गोदावरी के तट अथवा उसके जल-पट पर आकाश में उड़ती हुई श्वेत सारसों की पंक्ति देखिये। इन सारसों को उड़ते देखने में ही खूबी है, अत एव उस खूबी को प्रत्यक्ष करने के लिये स्थिर चित्र नहीं, बल्कि सिनेमा के चित्र की कल्पना कीजिये। इससे भी यदि अधिक वैचित्र्य चाहिये तो वह भवभूति के निम्नलिखित वर्णन में है[7]—

इह समदशकुन्ताक्रान्तवानीरवीरुत्-
प्रसवसुरभिशीतस्वच्छतोया वहन्ति।
फलभरपरिणामश्यामजम्बूनिकुञ्ज-
स्खलनमुखरभूरिस्रोतसो निर्झरिण्यः॥

प्रकृति और मानव एक दूसरे के लिए जीवन भर समर्पित हैं। इसी कारण मनुष्य की प्रकृति, प्रकृति के प्रभूत हरीतिमा और शान-शौकत को चार चांद लगा देना चाहता है वहीं प्रकृति भी मानव को अपने उदार हृदय से फल-फूल और छाया से संरक्षित कर देना चाहती हैं। आज मनुष्य ने प्रकृति की गोद में पलकर ही प्रकृति से छेड़छाड़ शुरू कर दी है। फलतः प्रकृति कुपित होकर कभी अति वृष्टि कभी अनावृष्टि तो कभी भू-स्खलन, भूकंप और अन्य-अन्य तरीकों से असमय काल कवलित कर रही है। प्रकृति वात्सल्यमयी माँ है वह अपने पूत को यूँ ही असहाय और निरीह दशा में नहीं देख सकती, वह मानव को बार-बार आगाह करती है।

'प्रकृति' शब्द अंग्रेजी भाषा के 'नेचर' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। भारतीय वाङ्मय में प्रकृति शब्द विविध अर्थों—सृष्टि, माया, शाश्वत सत्य, विचार शून्य, स्वभाव, प्रज्ञा आदि के रूप में व्यवहृत होता है। 'प्रकृति' पद का धातु एवं प्रत्यय के आधार पर अर्थ होगा जिस साधन से यह समस्त जगत् उत्पन्न किया जाता है—'प्रकर्षेण क्रियते सर्व जगदनया इति प्रकृति। किन्तु लोकव्यवहार में प्रकृति से तात्पर्य पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, नदी-समुद्र आदि दृश्यमान पदार्थों से लिया जाता है—'वह जगत्, जो अपनी अभिव्यक्तियों की समस्त अनन्त विविधता के साथ हमारे चारों ओर व्याप्त है। कभी-कभी प्रकृति केवल उसके एक भाग को, जीवमण्डल को कहते हैं।

साहित्य में मनुष्य के मन से लेकर पशु, पक्षी, नदी, पर्वत तक जितनी वस्तुओं, व्यापारों का वर्णन किया जाता है, वे सब प्रकृति के अन्तर्गत है। सीमित अर्थ में मानव-इतर सृष्टि को प्रकृति कहा गया है—'साधारण बोलचाल में प्रकृति मानव का प्रतिपक्ष है, अर्थात् मानवेतर ही प्रकृति है। सामान्यतः मनुष्य को छोड़कर अन्य समस्त सचेतन और अचेतन सृष्टि प्रसार को प्रकृति स्वीकार किया गया है। प्रकृति मनुष्य की आदि सहचरी है-

'सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः।'[8]

प्रकृति और काव्य का संबंध अभिन्न है। वैदिक ऋषियों ने प्रकृति को देवता का काव्य कहा है—'पश्य देवस्य काव्यं न विभेति न रिष्यति।' काव्य मानवीय अभिव्यक्ति है। इसलिए प्रकृति और काव्य के संबंधों की विवेचना में मानव बीच की कड़ी है। प्रकृति और मानव का संबंध आदिम है। मानव अपने विकास में प्रकृति से प्रेरणा प्राप्त करता रहा है, और काव्य मानव के विकसित मानस की अभिव्यक्ति है, यही प्रकृति और काव्य के संबंधों का आधार है। आधुनिक युग में प्रकृति-चित्रण की विविध प्रणालियाँ प्रचलित हैं। आज का कवि प्रकृति को अपने काव्य का मूलाधार मानता है और प्रकृति के ही माध्यम से अपनी सतरंगी कल्पनाओं को अभिव्यक्त करता है। प्रकृति दस रूपों में चित्रित हुई है—

Scanned with CamScanner

1. आलम्बन रूप में, 2. उद्दीपन रूप में, 3. संवेदनात्मक रूप में, 4. वातावरण-निर्माण रूप में, 5. रहस्यात्मक रूप में, 6. प्रतीकात्मक रूप में, 7. अलंकार-योजना के रूप में, 8. मानवीकरण के रूप में, 9. लोक-शिक्षा के रूप में और 10. दूती के रूप में।

जहाँ कविजन प्रकृति का प्रयोग जन-साधारण को शिक्षा या उपदेश देने के लिए किया करते हैं अथवा जहाँ कवि प्रकृति के विविध परिवर्तनों एवं प्रकृति की विध गतिविधियों के द्वारा जन साधारण को शिक्षा दिया करते हैं, वहां पर लोक शिक्षा के रूप में प्रकृति चित्रण माना जाता है। प्रायः प्राचीन काल से ही कविजन मानवों को प्रकृति के द्वारा शिक्षा देते आये हैं।

भारतीय दर्शन के अनुसार पुरुषार्थ को ही जीवन मूल्य की संज्ञा दी गई है। पुरुषार्थ का मूल्य अर्थ उन प्रयत्नों से है जिनसे मनुष्य अपने चरम लक्ष्य तक पहुंचता है। मानव-जीवन के चार उद्देश्य या मूल्य स्वीकार्य किये गये हैं—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। धर्म, अर्थ और काम जीवन के साधनात्मक मूल्य के रूप में तथा मोक्ष को जीवन के साध्यात्मक मूल्य के रूप में मान्यता दी गई है।

साहित्य में जीवन मूल्य के रूप को स्वीकार करने हेतु उसमें दो विशेषताओं का होना आवश्यक है एक तो यह कि वह सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् से युक्त हो दूसरा वह मनुष्य के चिन्तन का उसके विचारधारा का परिणाम हो। जीवन मूल्य की व्याख्या करते हुए अज्ञेय कहते हैं कि—जीवन मूल्य से तात्पर्य उन प्रबल संवेग युक्त प्रेरकों से है जो व्यक्ति तथा सुबुद्ध समाज को एक निश्चित लक्ष्य की प्राप्ति के लिये स्पृहणीय होकर सक्रियता प्रदान करते हैं।

साहित्य मानव-जीवन के सापेक्ष होता है और जीवन साहित्य से प्रेरित तथा प्रभावित होता रहता है। फलतः चिर गतिशील और विकासशील मानव मूल्य में परिवर्तन स्वाभाविक है। एक ओर इस परिवर्तन में साहित्य का प्रभाव सहयोगी होता रहता है तो दूसरी ओर मानव-जीवन के बदलते मूल्य के अनुरूप ही साहित्य की विविध विधाओं में विषय और अभिव्यंजना का रूपान्तरण दिखाई पड़ने लगता है।

संस्कृति और साहित्य दोनों का अद्भुत सम्बन्ध होता है क्योंकि साहित्य संस्कृति तत्वों का प्रतिबिम्ब हुआ करता है और संस्कृति साहित्य का आधार। उपभोक्तावादी संस्कृति के उदय होने से मनुष्य को अर्थ प्रधान और आत्म केन्द्रित बना दिया इसने मनुष्य के आचार-विचार, रहन-सहन जीवन-दर्शन को पूरी तरह बदल दिया। परम्परा और आधुनिकता के द्वंद्व में परम्परा का लोप और आधुनिकता का विकास होता गया। भारतीय संस्कृति आधुनिकता के रंग में रंगती गई। उसमें बौद्धिकता का समावेश होता गया। इस तरह प्रकृति में विन्यस्त हमारी संस्कृति परम्पराओं का ह्रास होता गया और नई आस्था युक्त संस्कृति का विकास हो रहा है।

कहा जा सकता है कि संस्कृत साहित्य के काव्य क्षेत्र में विश्व मोहिनी प्रकृति सुन्दरी के सचेतन, सुकुमार एवं सहज सौन्दर्यशाली रूप का जितना मर्मस्पर्शी चित्रण मिलता है उतना अन्यत्र नहीं दिखाई पड़ता है।

संदर्भ स्रोत

1. मेघदूत
2. उत्तररामचरित 02 अंक
3. रघु. 4/34
4. रघु. 13/30
5. रघु. 13/33
6. जल से संभृत मेघ मानों भाराक्रान्त था। इसलिए वह आश्रय-विश्राम लेता है। यह 'तोयवाह' और 'श्रयति' शब्दों के मेल से ध्वनि निकलती है।
7. उत्तररामचरित 02 अंक
8. विमान के झरोखों से बाहर लटकती हुई तेरी सोने की करधनी के घुंघुरुओं का शब्द सुनकर गोदावरी के सारस पक्षी, आकाश में उड़ते हुए, तुमसे भेंट सी करने आ रहे हैं।

Scanned with CamScanner